संख्या- 12/2016/120/41-2016-287 सा0/2015

प्रेषक,

नवनीत सहगल
प्रमुख सचिव,
उ0प्र0 शासन।

सेवा में,

महानिदेशक,
पर्यटन, उ0प्र0,
लखनऊ।

पर्यटन अनुभाग | लखनऊ दिनांक, 01 फरवरी, 2016

विषयः- उत्तर प्रदेश पर्यटन नीति-2016 के प्राख्यापन के सम्बन्ध में।

उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग द्वारा वर्ष 1998 में प्रदेश के पर्यटन उद्योग के बहुमुखी विकास के उददेश्य से प्रथम पर्यटन नीति घोषित की गयी थी। उल्लेखनीय है कि वर्तमान में उत्तर प्रदेश का पर्वतीय क्षेत्र उत्तराखण्ड अलग होकर एक राज्य के रूप में स्थापित हो चुका है एवं इसके साथ ही ऐसे राष्ट्रीय परिदृश्य में उत्तर प्रदेश के पर्यटन आकर्षणों की प्रभावी मार्केटिंग परम आवश्यक है, ताकि प्रदेश में पर्यटन उद्योग राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर अपनी विशिष्ट पहचान के साथ परिलक्षित हो सके। पर्यटन आज बहुआयामी रूप ले चुका है, आधुनिक जीवन शैली, अतिरिक्त आय तथा सूचनाक्रांति परिवारों को पर्यटन की ओर अग्रसर करती है। आज का प्रबुद्ध, जिज्ञासु पर्यटक, पर्यटन के लिए नित नये क्षेत्रों और आकर्षणों की खोज कर रहा है।

अतः रणनीतिपरक एवं सुनियोजित पर्यटन गतिविधियों की अपरिमित सम्भावनाओं के सम्यक सदुपयोग के परिपेक्ष्य में प्रदेश को एक प्रमुख पर्यटन राज्य के रूप में स्थापित करने के उददेश्य से एक नई पर्यटन नीति परमावश्यक है।

- भारत अन्तर्राष्ट्रीय अधिमान्य पर्यटन केन्द्र के रुप में विश्व-पटल पर स्थापित हो चुका है।
- उत्तर प्रदेश देश के राज्यों में सबसे अधिक पर्यटन आगमन प्राप्त करने वाला राज्य बन चुका है।
- वर्ष 1998 में प्रदेश में आने वाले 7.27 लाख विदेशी पर्यटको की संख्या वर्ष 2014 तक बढ़कर लगभग 29.09 लाख हो चुकी है।
- विगत वर्षो में सभी गतिविधियॉं इन्टरनेट पर आधारित हो गयी है तथा डिजिटल मीडिया में नित नये अभिनव प्रयोग किये जा रहे हैं। इस तकनीकी विकास के फलस्वरूप पर्यटन जगत में भी बड़ा परिवर्तन आया है।
- पर्यटन विभाग की भूमिका एक सेवा प्रदाता की भूमिका में बदल गयी है। विभाग को पर्यटन से जुडी समस्त संस्थाओं, वाणिज्यिक संगठनों को जोड़कर चलना है। अतः समय को देखते हुए हमें एक आधुनिक, गतिशील, व्यवहारिक तथा परिणाम परक पर्यटन नीति की आवश्यकता है।

2. ध्येय

- प्रदेश में स्थित पर्यटन उत्पादों को संरक्षित और सुरक्षित रखते हुए इस प्रकार विकसित करना कि वह चिरस्थाई हों।
- प्रदेश में पर्यटक आगमन बढाकर प्रदेश की आर्थिक उन्नति को और सम्पुष्ट करना।